



वस्त्र प्रिंटिंग तकनीकों का अध्ययन: एक प्रश्नावली-आधारित विश्लेषण

आरती लाड, शोधकर्ता, भाषा एवं मानविकी विभाग
शासकीय महिला पॉलिटेक्निक महाविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत
नीरजा गुप्ता, पीएच-डी, भाषा एवं मानविकी विभाग
रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE



Authors

आरती लाड, शोधकर्ता
नीरजा गुप्ता, पीएच-डी
E-mail : aartilad69@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 27/03/2026
Revised on : 28/05/2026
Accepted on : 06/06/2026
Overall Similarity : 00% on 29/05/2026



Plagiarism Checker X - Report

Originality Assessment

0%

Overall Similarity

Date: May 29, 2026 (06:26 AM)
Matches: 5 / 2948 words
Sources: 1

Remarks: No similarity found,
your document looks healthy.

Verify Report:
Scan this QR Code



शोध सार

वस्त्र प्रिंटिंग भारतीय परिधान एवं फैशन उद्योग का एक महत्वपूर्ण अंग है। यह परंपरागत कला एवं आधुनिक तकनीकी नवाचार के समन्वय से विकसित हुआ है। इस शोध-पत्र में प्रश्नावली-आधारित सर्वेक्षण के माध्यम से प्रतिभागियों के रूप में फैशन का अध्ययन करने वाले नवोदित फैशन डिजाइनरों की प्रिंटिंग व मोनो प्रिंटिंग से संबंधित विषय में जानकारी, अनुभव एवं रुचियों का विश्लेषण किया गया। मोनो प्रिंटिंग एवं मार्क मेकिंग जैसी विशेष तकनीकों के प्रति जागरूकता और रुचि का अध्ययन किया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि अधिकांश प्रतिभागी पारंपरिक विधियों से परिचित हैं, जबकि आधुनिक तकनीकें जैसे डिजिटल और स्क्रीन प्रिंटिंग भी तेजी से लोकप्रिय हो रही हैं। प्रतिभागी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग, इंटरनेट के माध्यम से कार्यशाला के द्वारा नवीन तकनीकों के अध्ययन को प्राथमिकता देते हैं। अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि, नवीन तकनीकों के प्रयोग से भारतीय फैशन उद्योग में नवाचार एवं वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता को नया आयाम मिल सकता है।

मुख्य शब्द

वस्त्र प्रिंटिंग, पारंपरिक तकनीकें, आधुनिक तकनीकें, रंग एवं डाईज़, नवाचार, फैशन उद्योग.

परिचय

वस्त्र उद्योग मानव जीवन की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता होने के साथ-साथ कला, संस्कृति एवं फैशन का भी प्रमुख माध्यम है। वस्त्रों में उपयोगिता के साथ सौंदर्य एवं आकर्षण का महत्व भी बढ़ा है इसी कारण वस्त्र सज्जा की विभिन्न तकनीकों का विकास हुआ, जिनमें वस्त्र प्रिंटिंग एक अत्यंत महत्वपूर्ण तकनीक है। वस्त्र प्रिंटिंग के माध्यम से कपड़ों पर विभिन्न रंगों, आकृतियों एवं डिजाइनों को आकर्षक रूप में अंकित किया जाता है, जिससे वस्त्रों की सुंदरता एवं बाजार मूल्य में वृद्धि होती है। भारत में वस्त्र प्रिंटिंग का इतिहास

अत्यंत प्राचीन है। पारंपरिक तकनीकों जैसे ब्लॉक प्रिंटिंग, बटिक, टाई-एंड-डाई, बांधनी और कलमकारी भारतीय सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा हैं।

कपड़े पर वस्त्र प्रिंटिंग करने के लिए वर्तमान में सात अलग-अलग विधियाँ उपयोग में लाई जाती हैं:

- हस्त ब्लॉक प्रिंटिंग।
- पेरोटीन प्रिंटिंग।
- उत्कीर्ण ताम्रपत्र प्रिंटिंग।
- रोलर सिलेंडर या मशीन प्रिंटिंग।
- स्टेंसिल प्रिंटिंग।
- स्क्रीन प्रिंटिंग।
- डिजिटल टेक्सटाइल प्रिंटिंग।

मोनो प्रिंटिंग प्रिंटमेकिंग का एक रूप है। इसमें केवल एक बार छवियाँ या रेखाएँ बनाई जा सकती हैं। मोनो प्रिंट बनाने के तीन मुख्य तरीके हैं:

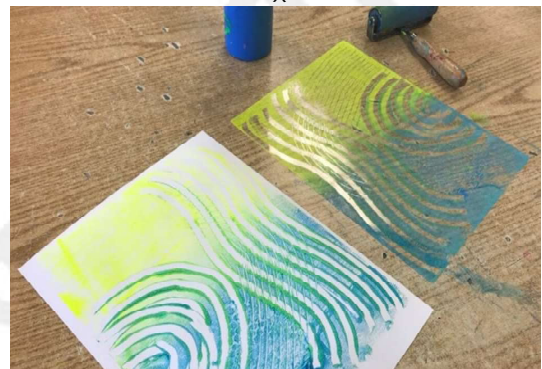
- ऐडिटिव या प्रकाश क्षेत्र विधि।
- सबट्रैक्टिव या अंधेरे क्षेत्र विधि।
- तीसरी विधि दोनों का संयोजन है।

चित्र 1: ऐडिटिव विधि



(Source: www.deviantart.com)

चित्र 2: सबट्रैक्टिव विधि



(Source: theartofeducation.edu)

उद्देश्य

इस शोध-पत्र के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- प्रतिभागियों की वस्त्र प्रिंटिंग तकनीकों के प्रति जानकारी एवं अनुभव का आंकलन करना।
- रंगों और डाईज के प्रयोग में परंपरा एवं आधुनिक प्रवृत्तियों की पहचान करना।
- मोनो प्रिंटिंग एवं मार्क मेकिंग जैसी विशेष तकनीकों के प्रति जागरूकता और रुचि का अध्ययन करना।
- भारतीय फैशन उद्योग में प्रिंटिंग तकनीकों की भविष्य संभावनाओं का विश्लेषण करना।

साहित्य का पुनरावलोकन

अज्रख प्रिंटिंग पर अध्ययन— अजरख: द एन्सिएंट ब्लॉक प्रिंटिंग टेक्सटाइल क्राफ्ट ऑफ़ इंडिया में टेक्सटाइल डिजाइन से संबंधित अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। पांडेय (2025) ने अज्रख प्रिंटिंग की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, प्राकृतिक रंगों तथा पारंपरिक ब्लॉक प्रिंटिंग तकनीकों का विश्लेषण किया। अध्ययन में बताया गया कि अज्रख प्रिंटिंग मुख्यतः कच्छ एवं सिंध क्षेत्र में प्रचलित रही है तथा इसमें इंडिगो एवं मदार जैसे प्राकृतिक रंगों का उपयोग किया जाता है।

बाग— ब्लॉक प्रिंटिंग पर अध्ययन: कम्युनिकेशन एंड चौलेंजेज ऑफ़ कैपेसिटी डेवलपमेंट: ए केस स्टडी ऑफ़ बागरू हँड ब्लॉक प्रिंटिंग में मैतेई एवं तनवीर अहमद (2022) ने राजस्थान की बागरू हँड ब्लॉक प्रिंटिंग पर अध्ययन किया। इस शोध

में बताया गया कि कृ बागरू प्रिंटिंग लगभग 300 वर्ष पुरानी पारंपरिक कला है, इसमें प्राकृतिक रंगों एवं हस्तनिर्मित ब्लॉकों का प्रयोग किया जाता है, आधुनिक बाजार एवं मशीन आधारित उत्पादन के कारण पारंपरिक कारीगरों को चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

भारत की हैंड ब्लॉक प्रिंटिंग पर अध्ययन: सम आइकोनिक टेक्सटाइल क्राफ्ट ऑफ़ हैंड ब्लॉक प्रिंट्स इन इंडिया में पांडेय (2022) ने भारत की प्रमुख ब्लॉक प्रिंटिंग शैलियों जैसे कृ अज्रख, सांगानेरी, बागरू, कलमकारी, बाघ प्रिंट का अध्ययन किया। अध्ययन में बताया गया कि भारतीय ब्लॉक प्रिंटिंग कला विश्वभर में अपनी हस्तनिर्मित गुणवत्ता एवं प्राकृतिक रंगों के कारण प्रसिद्ध है।

डाबू प्रिंटिंग पर अध्ययन: दाबू ए कॉम्प्रिहेंसिव स्टडी ऑफ़ मड रेसिस्ट प्रिंट्स एवोल्यूशन इन ट्रेडिशनल टू कंटेम्पोररी में अंजलि सिंह (2025) ने डाबू प्रिंटिंग का पारंपरिक से आधुनिक स्वरूप तक अध्ययन किया।

ए रिव्यू ऑन हैंड ब्लॉक प्रिंटिंग इन इंडिया में प्रीथा आर. (2024) ने भारत की हैंड ब्लॉक प्रिंटिंग पर विस्तृत समीक्षा प्रस्तुत की। अध्ययन के अनुसार हैंड ब्लॉक प्रिंटिंग भारतीय सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण भाग है। मशीन प्रिंटिंग की तुलना में हस्तनिर्मित प्रिंट अधिक विशिष्ट एवं कलात्मक होते हैं। उपभोक्ताओं में ईको-फ्रेंडली एवं हैंडमेड प्रोडक्ट्स की मांग बढ़ रही है।

कार्यप्रणाली

यह अध्ययन प्रश्नावली विधि पर आधारित है जिसमें दैव निदर्शन प्रणाली का उपयोग चर के चुनाव हेतु किया गया। प्रश्नावली में प्रतिभागियों से व्यक्तिगत सामान्य प्रश्नों के अतिरिक्त कुल 15 प्रश्न सम्मिलित किए गए, जो प्रतिभागियों की शैक्षणिक जानकारी, व्यावहारिक अनुभव, तकनीकों की समझ, रंगों/डाईज़ के उपयोग तथा नवीन विधियों में रुचि को परखने के लिए तैयार किए गए थे। गूगल फॉर्म की सहायता से एकत्रित आँकड़ों का विश्लेषण सांख्यिकीय प्रतिशत पद्धति के आधार पर किया गया।

चर विशेषताएं

मध्यप्रदेश के भोपाल जिले में 100 से अधिक फैशन डिजाइनिंग में अध्ययनरत छात्र छात्रायाँ एवं नवीन फैशन डिजाइनर्स हमारा सैंपल समूह है।

डेटा विश्लेषण एवं परिणाम

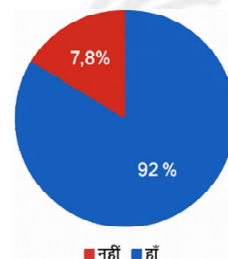
1) वस्त्र पर प्रिंटिंग के बारे में आपने अध्ययन किया है?

तालिका 1: वस्त्र प्रिंटिंग का अध्ययन

उत्तर	प्रतिशत
हाँ	92.0 प्रतिशत
नहीं	07.8 प्रतिशत

(स्रोत: प्राथमिक समंक)

चित्र 3: वस्त्र पर प्रिंटिंग के अध्ययन का पाई चार्ट



विश्लेषण: अधिकांश प्रतिभागियों (लगभग 92 प्रतिशत) ने वस्त्र पर प्रिंटिंग का अध्ययन किया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षण में शामिल अधिकांश लोग इस क्षेत्र से जुड़े हुए हैं या इसका शैक्षणिक/व्यावसायिक अनुभव रखते हैं। केवल 7.8 प्रतिशत प्रतिभागियों ने कहा कि उन्होंने इस विषय पर अध्ययन नहीं किया है।

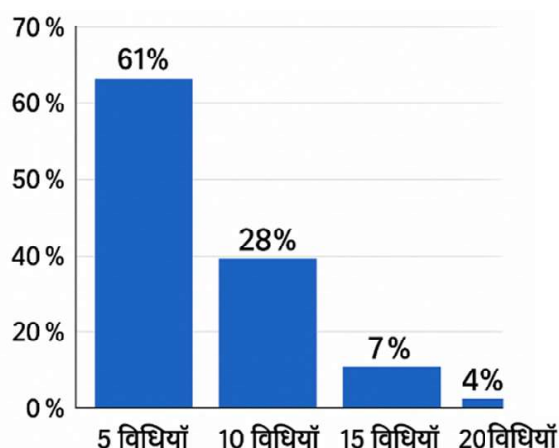
2) वस्त्र पर प्रिंटिंग की कुल कितनी विधियों के बारे में आपकी जानकारी है?

तालिका 2: वस्त्र प्रिंटिंग विधियों का ज्ञान

विधियों की संख्या	प्रतिशत
5 विधियाँ	61 प्रतिशत
10 विधियाँ	28 प्रतिशत
15 विधियाँ	07 प्रतिशत
20 विधियाँ	04 प्रतिशत

(स्रोत: प्राथमिक समंक)

चित्र 4: वस्त्र प्रिंटिंग विधियों का ज्ञान का बार चार्ट



विश्लेषण: सबसे अधिक प्रतिभागियों (61 प्रतिशत) को केवल 5 विधियों की जानकारी है, जबकि 28 प्रतिशत प्रतिभागियों को 10 विधियों तक का ज्ञान है। वहीं, 15 और 20 विधियों के बारे में जानकारी रखने वालों का प्रतिशत बहुत कम है।

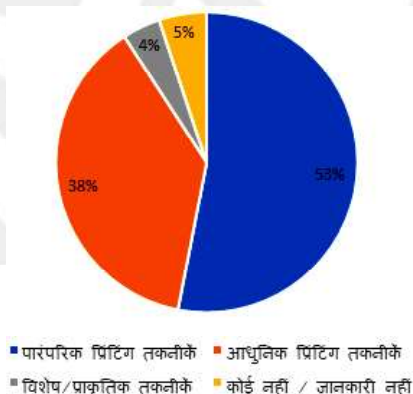
3) वस्त्र की प्रिंटिंग की कौन-कौन सी विधियों को आप जानते हैं?

तालिका 3: तकनीकों की जानकारी

तकनीक का प्रकार	प्रमुख विधियाँ	जानकारी रखने वाले (प्रतिशत)
पारंपरिक प्रिंटिंग तकनीकें	ब्लॉक प्रिंटिंग, बटिक, टाई एंड डाई, स्टेंसिल, कलमकारी, बांधनी	सबसे अधिक (80–90 प्रतिशत)
आधुनिक प्रिंटिंग तकनीकें	डिजिटल प्रिंटिंग, स्क्रीन प्रिंटिंग, रोलर प्रिंटिंग, हीट ट्रांसफर, डिस्चार्ज प्रिंटिंग, पिगमेंट प्रिंटिंग	मध्यम से उच्च (50–70 प्रतिशत)
विशेष/प्राकृतिक तकनीकें	इको-प्रिंटिंग	सीमित (5–10 प्रतिशत)
कोई नहीं / जानकारी नहीं	"नहीं जानता"	लगभग 5–7 प्रतिशत

(स्रोत: प्राथमिक समंक)

चित्र 5: वस्त्र की प्रिंटिंग विधियों की जानकारी का पाई चार्ट



विश्लेषण: सबसे अधिक प्रतिभागी (80–90 प्रतिशत) पारंपरिक प्रिंटिंग तकनीकों (ब्लॉक प्रिंटिंग, बटिक, टाई एंड डाई, स्टेंसिल, कलमकारी, बांधनी) के बारे में जानकारी रखते हैं। (50–70 प्रतिशत) प्रतिभागी पारंपरिक प्रिंटिंग तकनीकों के साथ साथ आधुनिक प्रिंटिंग तकनीकों (डिजिटल प्रिंटिंग, स्क्रीन प्रिंटिंग, रोलर प्रिंटिंग, हीट ट्रांसफर, डिस्चार्ज प्रिंटिंग, पिगमेंट प्रिंटिंग) के बारे में ज्ञान है। सीमित (5–10 प्रतिशत) विशेष/प्राकृतिक तकनीकों (इको-प्रिंटिंग) के बारे में जानते हैं। लगभग 5–7 प्रतिशत किसी भी प्रकार की प्रिंटिंग तकनीक के बारे में जानकारी नहीं हैं।

3) आपकी जानकारी में कौन-कौन से वस्त्रों पर प्रिंटिंग की जाती है?

तालिका 4: प्रिंटिंग के वस्त्रों की जानकारी

वस्त्र प्रकार	उल्लेख आवृत्ति
कॉटन	सर्वाधिक
सिल्क	उच्च
ऑर्गेजा / जॉर्जेट / पॉलिएस्टर / रेयान	मध्यम
अन्य	सीमित

(स्रोत: प्राथमिक समंक)

विश्लेषण: डेटा से यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश उत्तरदाताओं ने प्रिंटिंग के लिए कॉटन और सिल्क को सबसे लोकप्रिय माना, जबकि लिनेन, ऑर्गेजा, मलमल, पॉलिएस्टर, जॉर्जेट, क्रेप और ऊन जैसे विभिन्न प्रकार के वस्त्रों पर प्रिंटिंग किए जाने का उल्लेख किया।

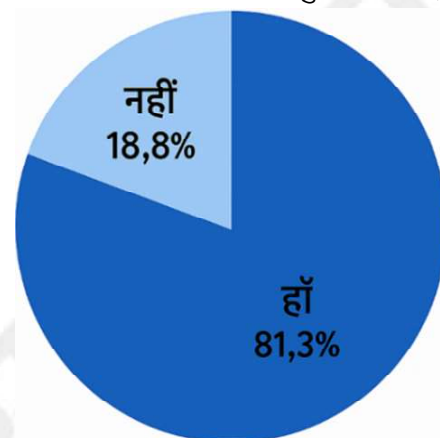
4) क्या आपने स्वयं कभी किसी भी प्रकार के वस्त्र पर प्रिंटिंग की है?

तालिका 5: प्रिंटिंग का व्यावहारिक अनुभव

उत्तर	प्रतिशत
हाँ	81.3 प्रतिशत
नहीं	18.8 प्रतिशत

(स्रोत: प्राथमिक समंक)

चित्र 6: प्रिंटिंग का व्यावहारिक अनुभव का पाई चार्ट



विश्लेषण: 81.3 प्रतिशत ने उत्तर दिया कि उन्होंने वस्त्रों पर स्वयं प्रिंटिंग की है जबकि 18.8 प्रतिशत ने उत्तर दिया कि उन्होंने कभी वस्त्र प्रिंटिंग नहीं की है। अधिकांश प्रतिभागियों ने स्वयं प्रिंटिंग की है।

5) आपने स्वयं कौन-कौन से वस्त्रों पर प्रिंटिंग की है?

तालिका 6: प्रिंटिंग के वस्त्र का प्रकार

वस्त्र प्रकार	उल्लेख आवृत्ति
कॉटन	सर्वाधिक
सिल्क / ऑर्गेजा / जॉर्जेट / पॉलिएस्टर / रेयान	मध्यम
अन्य	सीमित

(स्रोत: प्राथमिक समंक)

विश्लेषण: उत्तरों से स्पष्ट होता है कि प्रतिभागियों ने मुख्य रूप से कॉटन पर प्रिंटिंग का अनुभव प्राप्त किया है। इसके अतिरिक्त, कई उत्तरदाताओं ने सिल्क, मलमल, ऑर्गेजा, लिनेन, जॉर्जेट, शिफॉन, ऊन, पॉलिएस्टर, खादी, रेयान जैसे कपड़ों पर भी प्रिंटिंग किए जाने का उल्लेख किया। कुछ प्रतिभागियों ने सीधे परिधान जैसे साड़ी, टी-शर्ट, दुपट्टा, कुर्ती, पैंट और सूट सेट पर प्रिंटिंग का अनुभव साझा किया। हालाँकि, एक समूह (लगभग 20-25 प्रतिशत प्रतिभागी) ने अब तक किसी भी वस्त्र पर प्रिंटिंग नहीं की है।

6) आपकी जानकारी में वस्त्र पर प्रिंटिंग के लिए कौन-कौन से डाई का प्रयोग किया जाता है?

- प्राकृतिक डाई।
- रासायनिक डाई।

➤ ऐक्रेलिक डाई।

विश्लेषण: सर्वेक्षण में प्राप्त प्रतिक्रियाओं के आधार पर यह पाया गया उत्तरदाताओं ने प्राकृतिक और रासायनिक दोनों प्रकार के रंगों का प्रयोग किया। पारंपरिक प्राकृतिक रंगों जैसे हल्दी, सिंदूर, पान, आदि का उल्लेख किया। उत्तरदाताओं ने रासायनिक डाई Reactive Dyes, Pigment Dyes, Acid Dyes, Vat Dyes और Acrylic Dyes जैसे विभिन्न रासायनिक डाईज़ का उपयोग बताए। ब्लॉक प्रिंटिंग (Block Printing) के लिए विशेष प्रकार के ऐक्रेलिक डाई का उपयोग किया जाता है।

7) आपने वस्त्र पर प्रिंटिंग के लिए कौन-कौन से डाई का प्रयोग किया है?

तालिका 7: वस्त्र प्रिंटिंग में डाई के प्रकार का प्रयोग

श्रेणी	प्रतिशत
प्राकृतिक डाई	10
रासायनिक direct डाई	30
ऐक्रेलिक रंग	25
फैब्रिक पेंट	35

(स्रोत: प्राथमिक समंक)

विश्लेषण: सर्वेक्षण के आधार पर यह स्पष्ट हुआ कि 35 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने वस्त्र प्रिंटिंग के लिए फैब्रिक पेंट (पिगमेंट डाई) का उपयोग किया। रासायनिक डायरेक्ट डाई का उपयोग 30 प्रतिशत प्रतिभागियों द्वारा किया गया, 25 प्रतिशत ने विशेष रूप से ब्लॉक प्रिंटिंग में उपयोग किए जाने वाले ऐक्रेलिक रंग के उपयोग का उल्लेख किया। 10 प्रतिशत प्रतिभागियों ने घरों में उपलब्ध प्राकृतिक डाइज का प्रयोग भी किया है।

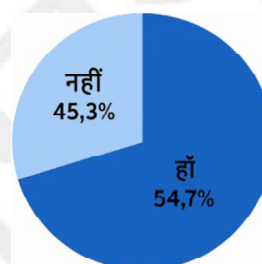
8) क्या आप मोनो प्रिंटिंग व मार्क मेकिंग के बारे में जानते हैं?

तालिका 8: मोनो प्रिंटिंग व मार्क मेकिंग की जानकारी

उत्तर	प्रतिशत
हाँ	54.7 प्रतिशत
नहीं	45.3 प्रतिशत

(स्रोत: प्राथमिक समंक)

चित्र 7: मोनो प्रिंटिंग व मार्क मेकिंग की जानकारी का पाई चार्ट



विश्लेषण: 54.7 प्रतिशत ने उत्तर दिया कि वे मोनो प्रिंटिंग व मार्क मेकिंग के बारे में जानते हैं। जबकि 45.3 प्रतिशत ने बताया कि वे इन तकनीकों से परिचित नहीं हैं।

9) मोनो प्रिंटिंग और मार्क मेकिंग के बारे में कहाँ से सुना है?

तालिका 9: मोनो प्रिंटिंग व मार्क मेकिंग की जानकारी

उत्तर	प्रतिशत
कॉलेज एवं संस्थान से	34
पुस्तक से	11
सोशल मीडिया से	23
कभी नहीं सुना	32

(स्रोत: प्राथमिक समंक)

विश्लेषण: सर्वाधिक 34 प्रतिशत ने बताया कि उन्होंने इन तकनीकों के बारे में कॉलेज और संस्थानों के माध्यम से सुना। 23 प्रतिशत ने सोशल मीडिया से सुना। प्रिंटिंग संबंधी पुस्तकों के माध्यम से 11 प्रतिशत ने जानकारी पाई। 32 प्रतिशत ने कहा कि उन्होंने इन शब्दों के बारे में कभी नहीं सुना।

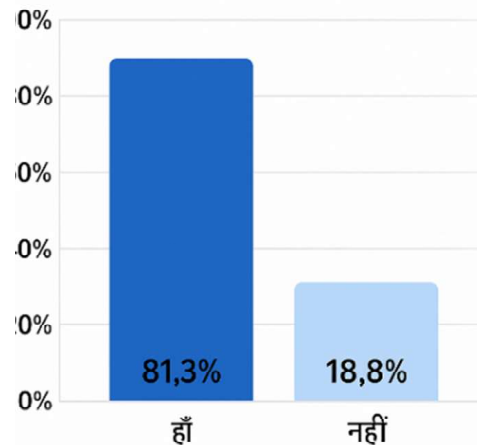
10) क्या आप मोनो प्रिंटिंग व मार्क मेकिंग के बारे में जानने के इच्छुक हैं?

तालिका 10: मोनो प्रिंटिंग व मार्क मेकिंग के बारे में जानने के इच्छुक **चित्र 8:** प्रिंटिंग के बारे में जानने के इच्छा का बार चार्ट

उत्तर	प्रतिशत
हाँ	81.3 प्रतिशत
नहीं	18.8 प्रतिशत

(स्रोत: प्राथमिक समंक)

विश्लेषण: यह दर्शाते हैं कि अधिकांश प्रतिभागी (81.3 प्रतिशत) मोनो प्रिंटिंग और मार्क मेकिंग तकनीकों के बारे में जानने के प्रति स्पष्ट रूप से इच्छुक हैं। केवल एक छोटा वर्ग (18.8 प्रतिशत) ऐसे प्रतिभागियों का है, जिन्होंने इस विषय में रुचि न होने की बात कही।



11) क्या आप इसके बारे में स्वयं नेट से पढ़ना पसंद करेंगे?

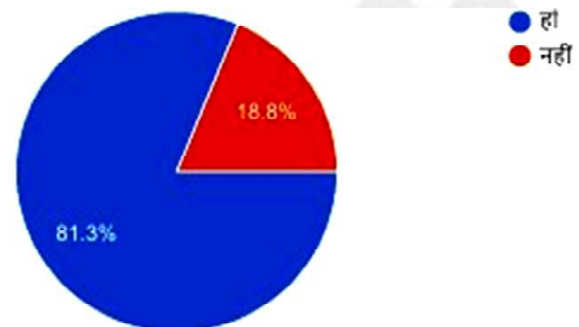
तालिका 11: नेट से पढ़ने की पसंद

उत्तर	प्रतिशत
हाँ	81.3 प्रतिशत
नहीं	18.8 प्रतिशत

(स्रोत: प्राथमिक समंक)

विश्लेषण: 81.3 प्रतिशत नेट से पढ़ना पसंद करेंगे जबकि 18.8 प्रतिशत ने नेट से पढ़ने में रुचि नहीं दिखाई।

चित्र 9: स्वयं नेट से पढ़ने की पसंद का पाई चार्ट



12) क्या आप इस विधा को जानने के लिए या कर के देखने के लिए वर्कशॉप करना चाहोगे?

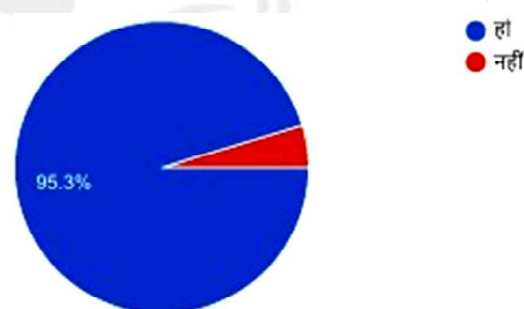
तालिका 12: वर्कशॉप द्वारा सीखने की सहमति

उत्तर	प्रतिशत
हाँ	95.3 प्रतिशत
नहीं	4.7 प्रतिशत

(स्रोत: प्राथमिक समंक)

विश्लेषण: 95.3 प्रतिशत वर्कशॉप के माध्यम से इस विधि को जानने और समझने के इच्छुक हैं। 4.7 प्रतिशत ने "नहीं" का उत्तर दिया है।

चित्र 10: वर्कशॉप द्वारा सीखने की सहमति का पाई चार्ट



13) क्या आप वस्त्र की प्रिंटिंग विधियों को, परिधान तैयार करने में प्रयोग करते हैं?

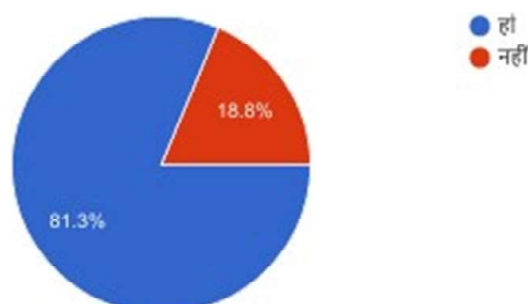
तालिका 13: प्रिंटिंग विधियों का परिधान में प्रयोग

उत्तर	प्रतिशत
हाँ	81.3 प्रतिशत
नहीं	18.8 प्रतिशत

(स्रोत: प्राथमिक समंक)

विश्लेषण: 81.3 प्रतिशत वस्त्र की प्रिंटिंग विधियों का उपयोग परिधानों को तैयार करने में किया है। 18.8 प्रतिशत (12 लोग) ने इस

चित्र 11: प्रिंटिंग विधियों का परिधान में प्रयोग का पाई चार्ट



प्रक्रिया का उपयोग नहीं किया है जो कि अपेक्षाकृत कम संख्या है।

14) क्या आपको लगता है कि, प्रिंटिंग की नवीन तकनीकों की जानकारी से भारतीय फैशन में नवाचार लाया जा सकता है?

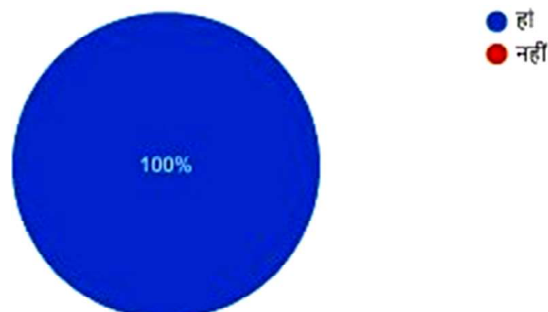
तालिका 14: प्रिंटिंग की नवीन तकनीकों से भारतीय फैशन में नवाचार की संभावनाएं

उत्तर	प्रतिशत
हाँ	100 प्रतिशत
नहीं	000 प्रतिशत

(स्रोत: प्राथमिक समंक)

विश्लेषण: 100 प्रतिशत ने का यह मानना है कि प्रिंटिंग की नवीन तकनीकों की जानकारी से भारतीय फैशन में नवाचार लाया जा सकता है।

चित्र 12: प्रिंटिंग की नवीन तकनीकों से भारतीय फैशन में नवाचार की संभावनाओं का पाई चार्ट



चर्चा

वस्त्र प्रिंटिंग क्षेत्र प्रतिभागियों में व्यापक रूप से जाना-पहचाना है। वस्त्र प्रिंटिंग के क्षेत्र में विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों की रुचि और संलग्नता अत्यधिक है एवं इस क्षेत्र से प्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए हैं अथवा उन्होंने शैक्षणिक स्तर पर इसका अध्ययन किया है। यह भी संकेत मिलता है कि इस विषय में शोध एवं नवाचार की संभावनाएँ अधिक हैं, क्योंकि आधारभूत अध्ययन प्रतिभागियों के बीच व्यापक रूप से प्रचलित है। वस्त्र प्रिंटिंग के क्षेत्र में जानकारी मुख्यतः प्रारंभिक या सामान्य स्तर तक ही सीमित है। सामान्य शैक्षणिक पाठ्यक्रमों में वस्त्र प्रिंटिंग की सीमित तकनीकों पर बल दिया जाता है। व्यावहारिक अनुभव भी केवल कुछ लोकप्रिय तकनीकों तक ही सीमित रहता है। ब्लॉक प्रिंटिंग और स्क्रीन प्रिंटिंग सबसे अधिक जानी-पहचानी विधियाँ हैं। डिजिटल और आधुनिक तकनीकें भी लोकप्रियता प्राप्त कर रही हैं। विशेष/प्राकृतिक तकनीकें कम, जो दर्शाती हैं कि इन पर और प्रशिक्षण की आवश्यकता है। वस्त्र प्रिंटिंग की बहुआयामी प्रकृति की जानकारी है। विशेष रूप से कॉटन और सिल्क वस्त्र भारतीय फैशन और टेक्सटाइल उद्योग में प्रिंटिंग के लिए सबसे अधिक लोकप्रिय और उपयुक्त माने जाते हैं। यह लोकप्रिय और प्रचलित गतिविधि है, जिसमें बहुसंख्यक लोगों की सीधी भागीदारी है। यह गतिविधि केवल व्यावसायिक स्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि व्यक्तिगत स्तर पर भी लोग इसमें सक्रिय रूप से भाग ले रहे हैं। दूसरी ओर, लगभग पाँचवाँ हिस्सा उत्तरदाताओं का ऐसा है जिन्होंने अभी तक इस गतिविधि में भाग नहीं लिया। यह समूह संभावित रूप से प्रशिक्षण, संसाधनों या अवसरों की कमी का प्रतिनिधित्व कर सकता है। भविष्य में इस क्षेत्र को और अधिक व्यापक बनाने के लिए जागरूकता एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन उपयोगी सिद्ध हो सकता है। वस्त्र प्रिंटिंग का प्रयोग सबसे अधिक कॉटन कपड़ों पर किया जाता है। वस्त्र प्रिंटिंग में डाईज़ का चुनाव रचनात्मकता, उपलब्धता और फैब्रिक के प्रकार पर निर्भर करता है।

मोनो प्रिंटिंग एवं मार्क मेकिंग को लेकर आंशिक जागरूकता मौजूद है। इस क्षेत्र में सूचना प्रसार एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता है। यह स्पष्ट है कि प्रिंटिंग तकनीकों से जुड़े पाठ्यक्रमों या प्रशिक्षण मॉड्यूल में पर्याप्त रूप से इन विधियों को शामिल नहीं किया गया है। भविष्य में, कार्यशालाओं, शैक्षिक कार्यक्रमों और व्यावहारिक प्रशिक्षण के माध्यम से इन तकनीकों की समझ को और गहरा किया जा सकता है, जिससे न केवल रचनात्मकता का विस्तार होगा बल्कि उद्योगों में नई संभावनाएँ भी विकसित होंगी।

परिणाम

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि वस्त्र प्रिंटिंग के प्रति प्रतिभागियों में गहरी रुचि और व्यावहारिक संलग्नता मौजूद है। पारंपरिक विधियाँ अभी भी लोकप्रिय हैं, किंतु आधुनिक तकनीकें तेजी से स्वीकार की जा रही हैं। डाईज़ के प्रयोग में प्राकृतिक डाईज़ की सांस्कृतिक छाप बनी हुई है, किंतु रासायनिक डाईज़ का उपयोग उद्योग की व्यावसायिक आवश्यकताओं और स्थायित्व के कारण प्रमुख हो गया है।

मोनो प्रिंटिंग एवं मार्क मेकिंग जैसी नई विधियाँ प्रतिभागियों के लिए अपेक्षाकृत नई हैं, किंतु इन्हें सीखने की गहरी रुचि यह दर्शाती है कि आने वाले समय में ये तकनीकें शिक्षा और उद्योग दोनों में अधिक महत्वपूर्ण होंगी।

निष्कर्ष

प्रश्नावली—आधारित विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकला कि वस्त्र प्रिंटिंग तकनीकों के प्रति प्रतिभागियों की जानकारी और व्यावहारिक अनुभव दोनों ही उच्च स्तर पर हैं। पारंपरिक तकनीकों जैसे ब्लॉक प्रिंटिंग और बटिक अब भी केंद्रीय स्थान रखती हैं, किंतु आधुनिक तकनीकों उद्योग की आवश्यकताओं के अनुरूप तेजी से उभर रही हैं। सभी प्रतिभागियों का यह मानना है कि नवीन तकनीकों का प्रयोग भारतीय फैशन उद्योग में रचनात्मकता, विविधता और वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ावा देगा। अतः यह कहा जा सकता है कि वस्त्र प्रिंटिंग का क्षेत्र परंपरा और आधुनिकता का संगम है, जिसमें भविष्य के लिए अपार संभावनाएँ निहित हैं।

संदर्भ सूची

1. Agarwal, R. (2022) Block printing traditions of Rajasthan and Gujarat. *Indian Journal of Traditional Knowledge*, 21(3), 456–463.
2. भटनागर, पारुल (2015) *पारंपरिक भारतीय वस्त्र*. अभिषेक पब्लिकेशन्स, चंडीगढ़ आईएसबीएन 9788182475847
3. Bose, M. (2020) *Traditional Indian textiles*. Thames & Hudson, London.
4. Chatterjee, A. (2021) *Surface ornamentation in Indian textiles*. *Indian Journal of Traditional Knowledge*, 19(4), 789–798.
5. Grabowski, B. & Fick, B. (2009) *Printmaking: A complete guide to materials and processes*. Laurence King Publishing, London, ISBN 9781856696005
6. Patni, Manju (2020) *Textile Designing and Printing* (Hindi Edition), Star Publications Pvt. Ltd, Delhi, ISBN-10, 9381246912. ISBN-13, 978-9381246917
